अध्याय-19

विदेशों से सहायता-प्राप्त परियोजनायें

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की वर्ष के दौरान विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजनाओं के अन्तर्गत की गई गतिविधियां इस प्रकार हैं :

परियोजना का शीर्षक :

सं.रा.वि.का.-भा.वा.अ.शि.प. परियोजना भा.वा.अ.शि.प. को सशक्त और विकसित करना

सं.रा.वि.का.-भा.वा.अ.शि.प. परियोजना ''भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् को सशक्त और विकसित करना'' मार्च, 1999 में पूरी होनी थी जिसका एक वर्ष, यथा-मार्च, 2000 तक की अवधि के लिए बढ़ाया गया। इस विस्तारित अवधि के दौरान भा.वा.अ.शि.प. ने 36,013.83 अमरीकी डालर (रूपये 15,57,589) निधि का उपयोग किया। परियोजना की विस्तारित अवधि के दौरान 14 राज्यों में देश के विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकीय क्षेत्र के 22 ज़िलों में फैले 126 परियोजना अंगीकृत गांवों में महिलाओं और बेराजगार युवाओं के विकास और प्रशिक्षण, पर मुख्य जोर दिया गया। परियोजना पर छायाचित्रों, उदाहरणों, सारणियों, चार्टों और ग्राफ्स आदि के साथ विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

परियोजना के तहत रोपण कार्यकलापों ने ईधन काष्ठ की उपलब्धता को बढ़ाया है। परियोजना ने अंगीकृत गांवों साथ ही साथ आसपास के गांवों के किसानों में, आधुनिक फार्म वानिकी तकनीकों का उपयोग करके अपने खेतों में उच्च गुणवत्ता रोपण स्टॉक पदार्थो को लगाने के बारे में जागरूकता बढ़ाई है। परियोजना के अन्तर्गत बीज प्रौद्योगिकी और रोपण प्रबन्ध में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत किसानों ने स्वयं की पौधशालायें भी लगाना शुरू कर दिया है।

परियोजना के लाभभोगी और प्रभाव

परियोजना के अन्तिम लाभ भोगी किसान, निर्धन जनजातियां, महिलायें आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग, बेरोजगार युवक और काष्ठ आधारित उद्योग हैं।

परियोजना ने वैज्ञानिकों और ग्रामीण लाभभोगियों के बीच बहुत लाभकारी संबंध बनाया है और ग्रहीत अनुसंधान की क्षमता को बढ़ाया है। परियोजना के अन्तिम लक्ष्य में टिप्पणी दी गई है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी को प्रयोगशाला से क्षेत्र में हस्तान्तरित करने में परिषद् संस्थानों के अन्दर भा.वा.अ.शि.प. वैज्ञानिकों की क्षमता में सुधार हुआ है। अंगीकृत गांवों में और इसके चारों ओर का क्षेत्र अब ज्यादा हरा-भरा है और वृक्षारोपण किसानों के कार्यकलाप के अभिन्न अंग बन गए हैं।

परियोजना का शीर्षक :

भारत के विभिन्न कृषि- पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडलों के विकास हेतु भा.वा. अ.शि.प. नाबार्ड परियोजना।

यह अनुसंधान परियोजना सितम्बर, 1995 से भा.वा.अ.शि.प. द्वारा क्रियान्वित हो रही है, इसे राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक (नाबार्ड) द्वारा प्रायोजित किया गया है। परियोजना का मूल परिव्यय रूपये 126 लाख था, जिसे घटाकर करीब रूपया 50 लाख कर दिया गया। इस पञ्च वर्षीय परियोजना के सितम्बर, 2000 में पूरा होने की आशा है। परियोजना का उद्देश्य सूक्ष्म जलसंभर पहुंच का उपयोग करके विभिन्न कृषिवानिकी मॉडलों की पहचान और विकास करना तथा विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के तहत पारितंत्र की स्वपोषणीयता सुनिश्चित करना है। परियोजना निम्न चार संस्थानों में क्रियान्वित हो रही हैं :-

- वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर : उष्ण अर्ध-शुष्क दोमटी मृदायें
- उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर : उष्ण अल्पार्द्र लाल काली मृदायें
- सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद : उष्ण अल्पार्द्र लाल कछारी मृदायें
- शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर : उष्ण शुष्क मरूथल तथा लवणीय मृदायें

6600 हैक्टेयर क्षेत्र को सम्मिलित कर 16 गांवों में 12 सूक्ष्म जलसंभरों का चयन किया गया।

विभिन्न पौधशालाओं में वानिकी प्रजातियों के 2,84,836 पौधों को लगाया गया। 50,253 फलदार वृक्षों को परियोजना पौधशालाओं में लगाया गया।

उगाए गए पादपों की संख्या नीचे दी गई है :-

प्रतिरूपवत (पादपों की संख्या)

	कोयम्बटूर	इलाहाबाद	जोधपुर	जबलपुर	कुल
वन संवर्धन-कृषि	73,780	11,865	12,553	28,225	1,25,066
वन संवर्धन-चरागाही	4,280	10,000	369	2,035	12,684
वन संवर्धन-औद्यानिकी	8,000	20,455	1,237	10,854	39,868
अन्य	7,692	39,501	6,776	43,166	88,742
कुल	93,752	71,821	20,935	84,280	2,66,360

प्रणालीवत (पादपों की संख्या)

	कोयम्बटूर	इलाहाबाद	जोधपुर	जबलपुर	कुल
पुश्ता रोपण	35,800	18,613	12,300	50,299	1,17,012
अनुक्रम रोपण	27,845	3,789	1,571	5,042	38,247
पंक्ति रोपण	15,915	5,593	110	-	21,618
ब्लॉक रोपण	14,192	43,826	6,954	28,939	93,911
कुल	93,752	71,821	20,935	84,280	2,70,788

मृत स्थानापन्न (पादपों की संख्या)

	कोयर्म्बटूर	इलाहाबाद	जोधपुर	जबलपुर
वृक्ष प्रजातियां	15,300	1992	3144	20,436
औद्यानिक प्रजातियां	900	85	796	645

1996, 1997, 1998 और 1999 में उगाए गए रोपणों से ऊँचाई और घेरा जैसे विभिन्न वृद्धि प्राचलों पर आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं और उपयुक्त कृषिवानिकी मॉडलों का विकास और सुझाव देने के लिए इनका विश्लेषण किया जाएगा।

परियोजना का शीर्षक :

विश्व बैंक सहायता प्राप्त वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार (फ्री) परियोजना (1999-2000)

वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार (फ्री) परियोजना विश्व बैंक की सहायता से 30 सितम्बर, 1994 को शुरू की गई। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय और हिमाचल प्रदेश एवं तमिलनाडु राज्य निष्पादक अभिकरण हैं। परियोजना की कुल अनुमानित लागत रूपया 2151.48 मिलियन है; जो 56.48 मिलियन अमेरीकी डालर के समतुल्य है। आई.डी.ए. ऋण (er-2571IN) 47.0 मिलियन अमरीकी डालर के बराबर है।

मार्च, 2000 तक कुल परियोजना व्यय, रूपये 168.360 करोड़ के एक परिव्यय के विरूद्ध, रूपये 140.83 करोड़ है। परिषद् द्वारा क्रियान्वित महत्वपूर्ण परियोजना कार्यक्रमों की प्रगति इस प्रकार है :

अनुसंधान प्रबन्ध

उद्देश्य :

(क) राष्ट्रीय, राज्य और संस्थान स्तर पर वानिकी अनुसंधान के प्रबंध और समन्वयन का सुधार करना।

(ख) यह सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाओं को सशक्त बनाना कि अनुसंधान प्राथमिकतायें राष्ट्रीय और राज्य प्राथमिकता से जुड़ी हैं।

(ग) राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान योजना विकसित करना और विस्तार अनुसंधान परिणामों में सुधार करना।

अनुसंधान प्रबंध के अन्तर्गत दो उप-घटक है :

(i) भा.वा.अ.शि.प. का विकास

भारतीय वानिकी अनुसंधान सूचना प्रणाली का विकास प्रगति पर है। 1999-2000 के दौरान विश्व बैंक पर्यवेक्षण मिशन द्वारा फ्रीप के अन्तर्गत जारी सभी परियोजनाओं का तकनीकी पुनरीक्षण किया गया। 1999-2000 के दौरान अनुसंधान प्राथमिकता निर्धारण और अनुसंधान सलाहकार समूह के लिए कार्यशालायें परिषद् संस्थानों में सम्पन्न हुई। सभी संस्थानों में अनुसंधान सलाहकार, समूह की वार्षिक बैठकें सम्पन्न हुई जिसमें चालू अनुसंधान कार्यक्रमों; राज्य वन विभागों, परिषद् की अनुसंधान आवश्यकताओं; राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग और सभी राज्यों की अनुसंधान प्राथमिकताओं पर चर्चा की गई। राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान योजना पर अनुवर्ती कार्रवाई शुरू की गई।

(ii) वानिकी विस्तार

रूपये 17.2 मिलियन के तेईस विस्तार प्रस्तावों को स्वीकृति दी गई और अब तक रूपये 14.40 मिलियन की निधियां मुक्त की गई। मीडिया प्रभाग, विस्तार निदेशालय, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा जारी परियोजनाओं का निरीक्षण किया गया। कुल मिलाकर 51 ब्राशुअर्स, 13 न्यूजलेटरों, 20 बुलेटिनों, 24 पुस्तिकाओं, 8 रिपोर्टो ओर 26 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

''वानिकी अनुसंधान विस्तार रणनीति - भा.वा.अ.शि.प.'' तैयार किया गया तथा कार्यक्रम की पुनरीक्षित प्रतियां कार्यान्वयन के लिए परिषद् संस्थानों के सभी निदेशकों को भेजी गयी। वितरण के लिए पर्याप्त संख्या में प्रतियां मुद्रित की जा रही हैं।

अनुसंधान कार्यक्रम सहायता

उद्देश्य :

(क) भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों में वानिकी कार्यक्रमों के लिए अवसंरचना, उपकरण और संचालन व्यय उपलब्ध कराना।

(ख) लोगों और निजी क्षेत्र अभिकरणों द्वारा अनुसंधान करने के लिए अनुसंधान अनुदान निधि की स्थापना करना।

(ग) सम्यक रूप से वानिकी अनुसंधान प्रणाली में सहायता के लिए रोपण स्टॉक की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु उपाय करना ओर संस्थानों एवं जारी अनुसंधान कार्यक्रमों का वैज्ञानिक पुनरीक्षण करना।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् संस्थानों में 1994 के दौरान अनेक वानिकी विद्या क्षेत्रों को मिलाकर तीस अनुसंधान कार्यक्रम शुरू किए गए, जो वर्ष 1999-2000 में भी जारी हैं। 1999-2000 के दौरान 910 हैक्टेयर बीज उत्पादन क्षेत्रों को छांटा गया। इसके अलावा, वर्ष के दौरान 156 हैक्टेयर क्लोनीय बीजोद्यान, 340 हैक्टेयर पौध बीजोद्यान और 52 हैक्टेयर कायिक गुणन उद्यान स्थापित किए गए। परियोजना राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों और अन्य निजी क्षेत्र संगठनों को निधियों का अनुदान (विशिष्ट अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए) भी उपलब्ध कराती है। मार्च, 2000 तक कुल रूपये 170.53 मिलियन राशि के 158 अनुसंधान कार्यक्रमों को स्वीकृति प्रदान की गई। देहरादून में राष्ट्रीय वन पुस्ताकालय एवं सूचना तंत्र और परिषद तथा सम्बन्धित संस्थानों के तहत पुस्तकालयों को शामिल करके एक नेटवर्क (भारतीय वन पुस्तकालय सूचना नेटवर्क) को अधिक विकसित किया गया। वानिकी पर एकत्रित और प्रलेखित ग्रे साहित्य के लिए कए प्रधान परामर्शदाता और 18 राज्य परामशेदाताओं को नियुक्त किया गया। परियोजना में राष्ट्रीय वन सांख्यिकी के संकलन ओर विश्लेषण के समन्वयन के लिए परिषद् में ही ''वन सांख्यिकीय इकाई'' विकसित करने की व्यवस्था भी शामिल है। ''फॉरेस्ट स्टैटिस्टिक्स इंडिया 1996'' को जून, 1999 में प्रकाशित किया गया। परिषद् के विभिन्न संस्थानों के अन्तर्गत 92 अनुसंधान परियोजनाओं में जैव-सांख्यिकीय सहायता प्रदान की गई।

वानिकी शिक्षा

उद्देश्य :

(क) वानिकी पाठ्यक्रम का विकास ओर मान्यकरण।

(ख) सामाजिक-आर्थिक साथ ही साथ तकनीकी अनुसंधान अवाईस में वित्त-व्यवस्था करने हेतु व.अ.सं. में सम विश्वविद्यालय का विकास करना।

इसमें सम विश्वविद्यालय, देहरादून के कार्य और विकास के पुनरीक्षण एवं संशोधन के लिए निधियों की व्यवस्था द्वारा औपचारिक शिक्षा में वानिकी पाठ्यक्रम (रोपण प्रौद्योगिकी तथा लुगदी एवं कागज प्रौद्योगिकी) के अलावा दो एम. एससी. पाठ्यक्रम (वानिकी और काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) शुरू किए गए। उपयुक्त चार पाठ्यक्रमों में 1999-2000 के दौरान 101 विद्यार्थियों को पंजीकृत किया गया। अनुसंधान मानवशक्ति तैयार करने के लिए 17 व.अनु.

अध्येता 121 क.अनु. अध्येता और 20 सह अनुसंधानकर्ताओं को रखा गया। विभिन्न संस्थानों को कुल 216 शिक्षावृत्तियां आवंटित की गई।

वर्ष 1994-95 से दिसम्बर 1999-2000 तक एफ.ए.ओ. द्वारा फ्रीप के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। दिसम्बर, 1999 तक कुल 324 कार्मिक अध्ययन दौरे, त्रैमासिक प्रशिक्षण और 12 माह प्रशिक्षण पर गए। कनिष्ठ वैज्ञानिकों के लिए सांख्यिकी पर जोर देते हुए अनुसंधान कार्यपद्धति पर पांच प्रशिक्षण पाठ्यक्रम दिल्ली और बंगलौर में आयोजित किए गए। वर्ष 1999 के दौरान 43 वैज्ञानिकों के लिए वैज्ञानिक 'ई' व 'एफ' हेतु दो सप्ताह की अवधि के दो पाठ्यक्रम भी आयोजित किए गए। लेखा से संबंधित मामलों को देखने वाले परिषद् व इसके संस्थानों के 14 कर्चमचारियों ने प्रबंध विकास संस्थान, लखनऊ में प्रशिक्षण प्राप्त किया। मार्च, 2000 में, ''भा.वा.अ.शि.प. के 40 अधिकारियों के लिए भावप्रवण समझ'' का आयोजन किया गया।

परियोजना का शीर्षक :

हिमालय परि-पुनर्वास (भा.वा.अ.शि.प.-आई.डी.आर.सी.)

हिमालय के सतत पुनर्वास के लिए एक क्षेत्रीय नीति एवं प्रबन्ध ढ़ांचा विकसित करने हेतु ''हिमालय पारि-पुनर्वास पर एक परियोजना 31.65 लाख के भा.वा.अ.शि.प. के अंशदान और आई.डी.आर.सी., कनाडा (0.5 मिलियन कनाडाई डालर) से वित्तीय सहायता के साथ अप्रैल, 1993 में शुरू की गई। सहभागी देश भारत, नेपाल, चीन और भूटान हैं।

उद्देश्य :

(क) भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) का उपयोग करके झूम खेती, खनन तथा अन्य सामान्य भूमि उपयोगों के कारण हानियों का मूल्यांकन एवं परिमाण निर्धारित करना।

(ख) झूम खेती की रोकथाम के लिए कृषि-वानिकी हस्तक्षेपों का विकास और परीक्षण करना।

(ग) विशिष्ट सूक्ष्म हस्तक्षेपों के साथ खनन से क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का पुनर्स्थापन करना।

(घ) चयनित क्षेत्रों में बेस लाइन और पारि-सामाजिक-आर्थिक प्रभाव अध्ययन करना।

(ङ) भा.वा.अ.शि.प. की सामाजिक-आर्थिक और अन्त: विद्या विशेष अनुसंधान क्षमताओं का सुदृढ़ करना।

(च) हिमालय के पुनर्वास के लिए राष्ट्रीय/क्षेत्रीय नीति की समीक्षा और संस्तुति करना।

परियोजना भारत के पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के पहचान किए गए क्षेत्र स्थलों में क्रियान्वित की गई और विभिन्न क्षेत्रों को निम्नीकृत भूमियों के केश अध्ययन किए गए। प्रसार के लिए निम्न रिपोर्टस को तैयार किया गया।

(i) हिमालय पारि-पुनर्वास पर तकनीकी रिपोर्ट

(ii) हिमालय पारि-पुनर्वास के सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण पर रिपोर्ट।

(iii) भारत के हिमालय प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर और पूर्वोत्तर क्षेत्र में वन नीति एवं कानूनी संरचना।

(iv) नेपाल, भूटान और चीन में वन नीति और कानूनी संरचना।

परियोजना के समापन पर ''हिमालय के पारि-पुनर्वास पर क्षेत्रीय परामर्श-राष्ट्रीय और स्थानीय अनुभवों को परस्पर बांटना'' विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

परियोजना का शीर्षक :

भारत के विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में नीम का विकास (व.अ.सं. : पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश; उ.क.व.अ.सं. : मध्य प्रदेश, उड़ीसा; ए.एफ.आर.आई. : गुजरात; व.अ.वृ.प्र.सं. : तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश एवं कर्नाटक)।

उद्देश्य :

(क) बीज संसाधन मूल्यांकन, संग्रहण और भण्डारण।

(ख) लक्षण वर्णन और सुधार के लिए ऋतुजैविकीय और रासायनिक मूल्यांकन।

(ग) गुणवत्ता और विश्वसनीय बीज स्रोत प्राप्त करने के लिए वृक्ष सुधार।

(घ) बहुमात्र गुणन, विशेषतः क्लोनीय प्रवर्धन के लिए तकनीकें; गुणवत्ता रोपण पदार्थ की उपलब्धता।

(ङ) कृषि वानिकी मॉडलों सहित आदर्श ग्राम रोपण।

(च) पश्च फसल औजारों और प्रौद्योगिकी का विकास, तेल निष्कर्षण और उपयोजन।

(छ) पीड़कनाशीय औषध और उर्वरकों के लिए नीम तेल एवं गौण उत्पादों का दोहन।

(ज) सूचना का प्रसार।

(झ) विभिन्न लक्ष्य समूहों को प्रशिक्षण।

परिणाम और उपलब्धियां/की गई प्रगति :

कैन्डिडेट धन वृक्षों की पहचान : पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राज्यों में विभिन्न क्षेत्रों में वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा सर्वेक्षण किया गया। 453 कैन्डिडेट धन वृक्षों की पहचान की गई।

बीज संग्रहण :

453 कैन्डिडेट धन वृक्षों और 16 उद्‌गमस्थलों से फल एकत्र किए गए। फलों से 306.00 कि.ग्रा. भार के बीज प्राप्त किए गए और पौधशाला स्टॉक, विनिमय कार्यक्रम, रासायनिक मूल्यांकन और भण्डारण जैसे विभिन्न अध्ययनों के लिए इनका उपयोग किया गया।

बीज अंकुरण :

प्रत्येक कैन्डिडेट धन वृक्षों/उद्‌गमस्थल से, पौधशाला और बीज प्रयोगशाला में अंकुरण परीक्षण पर अध्ययन किए गए ताकि संग्रहण के तुरन्त बाद अंकुरण प्रतिशतता का निर्धारण किया जा सके। 1999 के दौरान कैन्डिडेट धन वृक्षों के संबंध में अंकुरण आंकड़े 0.5 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक थे।

नीम पौधशाला :

बीजों को मिट्‌टी के गमलों, एनैमल ट्रे में बोया गया और अंकुरण प्रतिशतता, अंकुरण में लगे समय, औसत अंकुरण समय, उत्तर जीविता प्रतिशतता और वृद्धि की दर के लिए प्रेक्षण लिए गए। अंकुरण परीक्षण के लिए प्रयुक्त अंकुरण माध्यम नदी की रेत थी। विभिन्न उद्‌गमस्थल के लिए नीम पौधों की ऊंचाई वृद्धि और कॉलर व्यास वृद्धि अभिलिखित की गई।

पौधशाला में उपलब्ध पौधों की कुल संख्या नीचे दी गई है :

घटक	पौधों की संख्या
कैन्डिडेट धन वृक्ष	36230
उद्‌गमस्थल	8130
सामान्य	13800
पॉलिबैग	570
प्रतिरोपण क्यारियां	520
कुल	**59,250**

कायिक प्रवर्धन :

उच्च तेल उत्पादन वृक्षों के बहुमात्र गुणन के लिए, कायिक तकनीक को मानकीकृत किया गया। कायिक प्रवर्धन तकनीकों में शाखा कलमों की मूलोत्पत्ति, मृदु काष्ठ कलम (ग्रन्थिल) की मूलोत्पत्ति और उपचारित मृदु काष्ठ कलम को वर्मिक्यूलाइट मीडिया में रोपित करके धूमिका कक्ष (35 डिग्री सेन्टीग्रेड) में रखा गया तो इसने करीब 50 प्रतिशत मूलोत्पत्ति दी।

ऋतुजैविकीय अध्ययन :

फरवरी, 2000 के दौरान विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों में चयनित वृक्षों के संबंध में ऋतुजैविकीय अध्ययन किए गए। विभिन्न उद्‌गमस्थल में पत्ते झड़ने, पुष्पण, नए पत्ते निकलने और फलन के संबंध में प्रेक्षण अभिलिखित किए गए। परिणामों से प्राप्त अंतिरम निष्कर्ष दर्शाते हैं कि पत्ती झड़ना, पुष्पण नए पत्ते आना और फलन, हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ क्षेत्र की तुलना में आगरा, मथुरा, अलीगढ़ जैसे शुष्क क्षेत्रों में जल्दी होता है।

प्रशिक्षण एवं विस्तार :

(क) प्रशिक्षक प्रशिक्षण : व.अ.सं., देहरादून में 6 और 7 मार्च, 2000 को आयोजित एक प्रशिक्षक प्रशिक्षण में 33 सहभागियों ने भाग लिया।

(ख) किसानों का प्रशिक्षण : 27 और 28 मार्च, 2000 को सोहना (हरियाणा) में आयोजित किसान प्रशिक्षण में गुड़गांव जिले (हरियाणा) के 50 किसानों ने भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प.-फोर्ड फाउन्डेशन परियोजना

क्र०सं० : 1

परियोजना पहचान सं० : टी.एफ.आर.आई.-95/एफ.एफ.पी.-21

प्रधान अन्वेषक का नाम : अमित सहाय

परियोजना का शीर्षक : लोगों की हिस्सेदारी के लिए उत्पादकता वृद्धि-प्रबन्धन।

परियोजना शुरू होने का वर्ष : 1995

समापन का लक्ष्य वर्ष : 2000

परियोजना लागत : रूपये 67.77 लाख

उद्‌देश्य :

(क) संस्तुत किए जाने वाले वन संवर्धनिक विकल्पों का अध्ययन करना।

(ख) अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन करना।

(ग) ग्रामीण संस्थाओं द्वारा मशरूम एवं औषधीय पादप खेती, रस्सी बनाने, मत्स्यपालन आदि के लिए कार्यकलापों में सहायता करना।

(घ) लिंग मुद्‌दों के अध्ययन करना।

अन्वेषणों का वैज्ञानिक महत्व :

प्रबन्ध में लोगों की सहभागिता अधिक प्रभावी ढंग से वनस्पति और प्राणिजात के संरक्षण में सहायक होगी।

परिणाम/उपलब्धियां :

7-8 फरवरी, 2000 को ''संयुक्त वन प्रबन्ध द्वारा सतत वानिकी'' पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। महुवा फूलों एवं बीजों तथा चारे के लिए उत्पादकता उपज सारणियां तैयार की गई और फल उत्पादन तथा छत्र एवं वृक्ष घेरा के बीच सहसंबंध विकसित किया गया। सक्षम संयुक्त वन प्रबंध स्थलों के चयन के लिए संकेतों की पहचान करने हेतु कार्यपद्धति का विकास किया गया। सभी स्थल गांवों में मशरूम खेती सहित राओरया में मत्स्य पालन जारी था। गत वर्ष के मछली उत्पादन के विपणन का कार्य वन सुरक्षा समिति द्वारा किया गया और प्राप्त आय समिति के लेखे में जमा की गई। इस राशि का उपयोग तालाब की गाद को हटाने में किया गया। गत वर्षोके दौरान किए गए प्रजाति परीक्षण के परिणामों का उपयोग, खेत पुश्तों के साथ-साथ रोपण के लिए ग्रामीणों में उपयुक्त बहु उद्देशीय वृक्षों के वितरण के लिए किया गया। जबलपुर और सम्भलपुर दोनों स्थलों में लाख खेती जारी थी। सम्भलपुर में वानस्पतिक उद्यान लाभकारी बन गए। अश्वगंधा और सीनॉय पादप ग्रामीणों में बटे गए। सामाजिक-आर्थिक परिच्छेदिका पूर्ण की गई। सभी चयनित गांवों में लिंग मुद्दों पर अध्ययन किए गए।